"मेरे साहिब जी"

- गुर सेवा ते अंमृित फल पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई । हरि का नाम हिरदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ।

अर्थ:- हे भाई ! जिस मनुष्य ने गुरु की शरण पड़ के आत्मिक जीवन देने वाला हरि नाम फल प्राप्त कर लिया, उसने अपने अंदर से अहंकार और तृष्णा की आग बुझा ली । परमात्मा का नाम उसके हृदय में उसके मन में बस गया, उसके मन का मायावी फुरना मन में ही लीन हो गया ।

हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे । अनदिन हरि गुण दीन जन मागै गुर कै सबदि उधारे ।

अर्थः- हे मेरे प्यारे प्रभु जी ! मुझ गरीब पर मेहर कर । तेरे दर का गरीब सेवक तुझसे हर वक्त तेरे गुण गाने की दाति माँगता है। हे प्रभु ! मुझे गुरु के शब्द के द्वारा विकारों से बचाए रख ।

संत जना कउ जम जोहि न साकै रती ऊंच दूख न लाई । आपि तरहि सगले कुल तारहि जोतेरी सरणाई।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा की भक्ति करने वाले लोगों की तरफ जमराज भी ताक नहीं सकता, दुनिया के दुखों का रत्ती भर भी सेक उनको लग नहीं सकती । हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरी शरण आ पड़ते हैं, वह स्वयं संसार समुंदर से पार लांघ जाते हैं, अपनी सारी कुलों को भी पार लंघा लेते हैं ।

भगता की पैज रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई । जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ।

अर्थः- हे प्रभु ! अपने भकतों की लोक - परलोक में इज्जत तू स्वयं ही रखता है, यह तेरी प्रतिभा है । तू उनके पिछले अनेक ही जन्मों के पाप और दुख काट देता है, उनके अंदर रत्ती भर भी राई भर भी मेर - तेर नहीं रह जाती दुबिधा समाप्त हो जाती है ।

हम मूड़ मुगध किछ बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई । जो तुध भावै सोई करसी अवर न करणा जाई ।

अर्थः- हे भाई ! हम जीव मूर्ख हैं अन्जान हैं, हम आत्मिक जीवन का सही रास्ता रत्ती भर नहीं समझते, तू स्वयं ही हमें यह समझा देता है । हे प्रभु ! जो काम तुझे अच्छा लगता है, वह हरेक जीव करता है, उस से उलट और कोई काम नहीं किया जा सकता ।

जगत उपाई तुध धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई । जनम पदारथ जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ।

अर्थः- हे प्रभु ! तूने स्वयं ही जगत को पैदा करके तूने स्वयं ही इसको माया के धंधे में लगा रखा है, तेरी प्रेरणा से जगत माया के मोह की बुरी कार कर रहा है । माया के मोह में फंस के जगत ने कीमती मानव जनम को जुआरिए की तरह जूए में हार दिया है, गुरु के शब्द से जगत ने आत्मिक जीवन की सूझ हासिल नहीं की ।

मनमुखि मरहि तिन किछ न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा । भवजलि पारि न पावहि कबही डूबि मुए बिन गुर सिरि भारा ।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य आत्मिक मौत सहेड़ लेते हैं, उनको आत्मिक जीवन की रत्ती भर भी समझ नहीं पड़ती । बुरी मति का, आत्मिक जीवन के प्रति बेसमझी का उनके अंदर अंधकार छाया रहता है । वे मनुष्य गुरु की शरण पड़ बिना विकारों में सिर के भार डूब के आत्मिक मौत सहेड़ लेते हैं, वे कभी भी संसार समुंदर से पार नहीं लांघ सकते ।

साचे सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए । गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य सदा - स्थिर प्रभु की महिमा के शब्द में रंगे रहते हैं वे सदा - स्थिर प्रभु का रूप हो जाते हैं । प्रभु ने स्वयं ही उनको अपने साथ मिला लिया होता है। गुरु के शब्द से उन्होंने गुरु के आत्म तरंग के साथ सांझ पा ली होती है । वे मनुष्य सदा - स्थिर प्रभु में तवज्जो जोड़े रखते हैं ।

तूं आपि निरमल तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ।
नानक तिन कै सद बलिहारै राम नाम उरि धारे । (3-1155)

अर्थः- हे प्रभु ! तू स्वयं पवित्र स्वरूप है । तेरे सेवक गुरु के शब्द द्वारा तेरे गुणों का विचार कर के पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं । हे भाई ! नानक उन मनुष्यों से सदा सदके जाता है, जो परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाए रखते हैं।

(पाठी माँ साहिबा)

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"